आँचलिकता के परिप्रेक्ष्य में मार्कण्डेय का कथा साहित्य : एक अनुशीलन

ANCHALIKATA KE PARIPREKSHYA MEIN MARKANDEY KA KATHA SAHITYA : EK ANUSHEELAN

Thesis submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

for the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

HINDI

Under the Faculty of Humanities

By

SINJU P.V.

सिंजु पी.वी.

Prof. (Dr.) K. AJITHA
Head of the Department

Dr. GIRISH KUMAR K.K.
Supervising Teacher

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Kochi-682 022

JANUARY - 2018

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis entitled **"ANCHALIKATA KE PARIPREKSHYA MEIN MARKANDEY KA KATHA SAHITYA : EK ANUSHEELAN"** is a bonafide record of research work carried by **Ms. SINJU P.V.** under my supervision for Ph.D (Doctor of Philosophy) Degree and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any university. All the relevant corrections and modifications suggested by the audience during the pre-synopsis seminar and recommended by the Doctoral Committee of the candidate has been incorporated in the thesis.

Dr. GIRISH KUMAR K.K
Assistant Professor
Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology

Place : Kochi-22
Date :

DECLARATION

I hereby declare that the work presented in this thesis entitled **"ANCHALIKATA KE PARIPREKSHYA MEIN MARKANDEY KA KATHA SAHITYA : EK ANUSHEELAN"** based on the original work done by me under the guidance of Dr. Girish Kumar K.K, Assistant Professor, Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Cochin-682 022 and no part of this thesis has been included in any other thesis submitted previously for the award of any degree in any other university.

Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology
Kochi-22.

SINJU P.V.

Date :

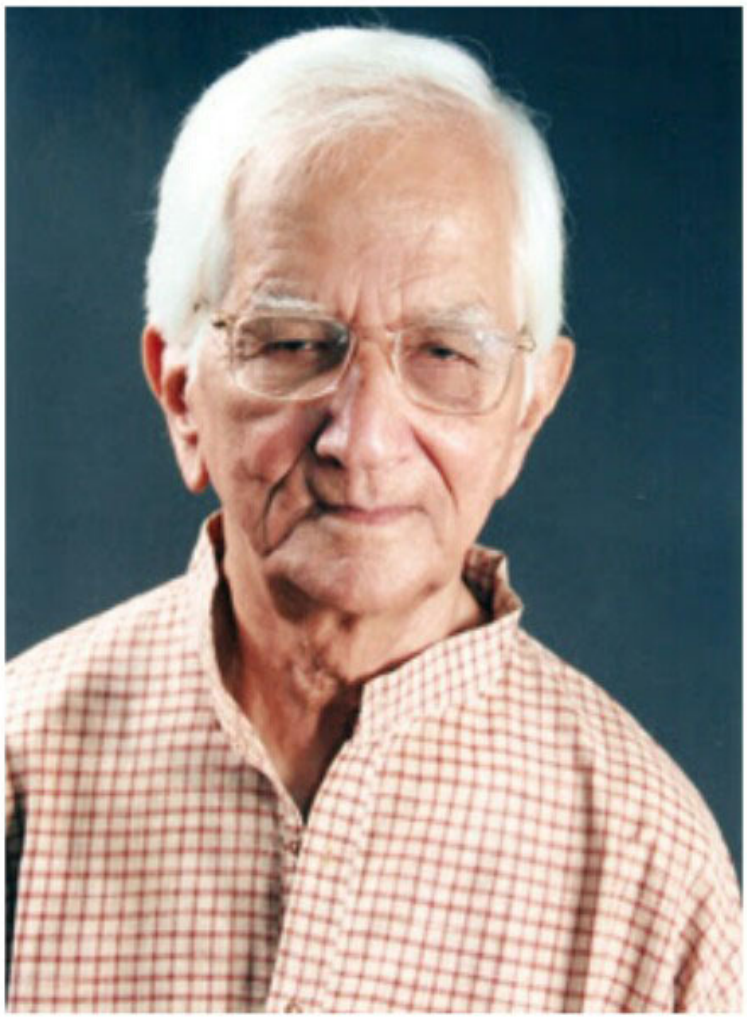

मार्कण्डेय
(02.05.1930 - 18.03.2010)

"एक जनधर्मी रचनाकार की ज़मीन पर अनुभव और विचारों की जिस तैयारी के साथ आना चाहिए, मार्कण्डेय कथा के मंच पर उस तरह की तैयारी के साथ आए। आज़ादी के बाद के बदलते हुए गाँव, उनकी रचना के केन्द्र में थे। स्वाधीनता-आन्दोलन के विपथन और उसकी पूरी विडंबनाओं की खरी समझ और आज़ादी के बाद के गाँवों के बदलते परिदृश्य के विशद अनुभव मार्कण्डेय के कथाकार की सबसे बडी पूँजी थे।"

-शिवकुमार मिश्र
(सं. प्रकाश त्रिपाठी - मार्कण्डेय : परम्परा और विकास - पृ. 35)

पुरोवाक्

समाज के प्रति साहित्यकार की संवेदनशीलता सामान्य व्यक्ति से बिलकुल भिन्न होती है। वह समाज की विडम्बनाओं के कारणों को पहचानते हैं तथा उन्हें दूर करने का संघर्ष रचना के जरिए शुरू करता है। इस उद्देश्य से वह अपनी लेखनी को हथियार बना लेता है। सामाजिक यथार्थ का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करके वह जनता को जाग्रत करने का सतत प्रयत्न ज़ारी रखता है। ऐसी रचनाओं में अवाम याने कि लोक के प्रति पक्षधरता अपने आप जाहिर होती है। आँचलिक साहित्य लोक-पक्षधरता का साहित्य है। जिसमें लोक जीवन का यथार्थ वास्तविक अर्थों में अभिव्यक्त हो जाता है। लोक एवं स्थानीय परिवेश का अंकन, उसकी स्थितियों का सूक्ष्म विश्लेषण इसका विषय है। हिन्दी में आँचलिक साहित्य का आगमन स्वातंत्र्योत्तर युग में ही हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर युग की जीवन-स्थितियों ने उसके आगमन के लिए पृष्ठभूमि तैयार की थी। साहित्य में आँचलिकता एक सांस्कृतिक प्रवृत्ति है, जिसके भीतर भारतीयता को तलाशने की सूक्ष्म अंतर्धारा कार्य कर रही है।

वैश्वीकरण के दौर में देश के आधारभूत तत्वों पर हमला हो रहे हैं। बाज़ारवादी ताकतें जनता को उनकी अपनी संस्कृति एवं मिट्टी से अलग करके उसके ऊपर कृत्रिम संस्कृति थोपने की साजिश रच रही हैं। सांस्कृतिक अतिक्रमण के कारण देश जड़वत बनता जा रहा है। देशवासी मन और मस्तिष्क से उपनिवेशी शक्तियों की दासता स्वीकार करने के लिए मज़बूर हो रहे हैं। इसलिए भारत आज के समय में भीषण सांस्कृतिक संकट से गुज़र रहे हैं। ऐसे मौके पर सांस्कृतिक विघटन को रोकना लाजिमी है। आँचलिक साहित्य इस भीषणता का सजग प्रत्युत्तर

है। वह लोक तथा स्थानीयता का समर्थन करता है, क्योंकि भारत की संस्कृति का निर्माण लोक या ग्रामांचल से ही हुआ है। इसप्रकार आँचलिक साहित्य सांस्कृतिक संकट को रोक लेने का मजबूत हथियार है।

मार्कण्डेय आँचलिक साहित्य का एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपने कथासाहित्य के जरिए स्वातंत्र्योत्तर ग्रामांचलिक जीवन यथार्थ को बेहद वफादारी के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं में सांस्कृतिक पुनःनिर्माण का कार्य सफलता से हुआ है। सांस्कृतिक संकट की वर्तमान बदहाली में आँचलिक साहित्य का अपना महत्व है। इसलिए उसे मैं ने अपने अध्ययन का विषय बनाया है। मार्कण्डेय के कथासाहित्य में अभिव्यक्त ग्रामांचलिक जीवन के विभिन्न आयामों को पकड पाने तथा विश्लेषित करने का विनम्र प्रयास है प्रस्तुत शोध प्रबंध। इसका शीर्षक रखा है - **'आँचलिकता के परिप्रेक्ष्य में मार्कण्डेय का कथा साहित्य : एक अनुशीलन'**। प्रस्तुत शोध प्रबंध को अध्ययन की समग्रता की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है और अंत में उपसंहार है।

इस शोध प्रबंध का पहला अध्याय है - **'आँचलिकता की अवधारणा एवं मार्कण्डेय का सर्जनात्मक व्यक्तित्व'** इस अध्याय के अंतर्गत आँचलिकता की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए अंचल और आँचलिकता के अर्थ एवं परिभाषा, ग्रामांचल के स्वरूप तथा स्वातंत्र्योत्तर ग्रामांचलिक परिवेश पर प्रकाश डाला गया है। इसके उपरांत आँचलिक साहित्य की विशेषताओं तथा आँचलिक हिन्दी कथा साहित्य को अपने असीम योगदान से समृद्ध किए गए प्रमुख रचनाकारों पर विचार किया गया है। अन्त में मार्कण्डेय के वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरा अध्याय है - **'मार्कण्डेय के कथा साहित्य में सामाजिक जीवन'**। इस अध्याय में मार्कण्डेय के कथा साहित्य में अभिव्यक्त ग्रामांचलिक जीवन का पारिवारिक संदर्भ, सामाजिक संबन्धों में आये बदलाव, शिक्षा, स्वास्थ, नारी जीवन की विषमताएँ एवं उनका प्रतिरोध, हाशियेकृत लोगों की समस्या एवं उनका प्रतिरोध जैसे मुद्दों पर विस्तार से विचार किया गया है।

'मार्कण्डेय के कथा साहित्य में राजनीति एवं अर्थ' शीर्षक तीसरे अध्याय में राजनीति की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए मार्कण्डेय की राजनीतिक विचारधारा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके उपरांत सत्ता के केन्द्र में ज़मींदारों का आगमन, जातिवाद, चुनाव की राजनीति, भ्रष्ट राजनीति का प्रतिरोध जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। फिर ग्रामांचलिक दुर्दशा का कारण, आर्थिक विकास योजनाओं की विफलता, आर्थिक शोषण, वर्ग संघर्ष, विद्रोह आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है।

चौथा अध्याय मार्कण्डेय के कथा साहित्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन से जुडा हुआ है। इसका शीर्षक है - **'मार्कण्डेय के कथा साहित्य में संस्कृति एवं धर्म'**। इस अध्याय में ग्रामवासियों की कृषक संस्कृति, प्रकृति से जुडी जिन्दगी, सहयोग की भावना, रहन-सहन, रीति-रिवाज़, विवाह का सांस्कृतिक पक्ष, पर्व एवं त्योहार, लोकगीत, ग्रामांचलिक जीवन का धार्मिक आयाम, धार्मिक जीवन का नकारात्मक पक्ष जैसे मुद्दों पर विस्तार से विचार किया गया है।

इस शोध प्रबंध का पाँचवाँ अध्याय है - **'मार्कण्डेय के कथा साहित्य का संरचना पक्ष'**। इस अध्याय में मार्कण्डेय के कथा साहित्य के देश-काल, वातावरण तथा संवाद पर ध्यान रखकर कथ्यगत एवं चरित्रगत विशेषताओं का विश्लेषण

किया गया है। उनकी रचनाओं की भाषिक विशेषताऐं यानी ग्रामीण शब्दावली, मुहावरे, बिंब, लोकोक्ति, विभिन्न शैलियों आदि पर विशेष रूप से विचार किया गया है।

अन्त में उपसंहार है। उसमें शोधकार्य का निचोड़ प्रस्तुत है।

प्रस्तुत शोधकार्य कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त आचार्य डॉ. एम. षण्मुखन जी के निर्देशन एवं निरीक्षण में संपन्न हुआ है। उनके बहुमूल्य सुझावों तथा प्रेरणादायक विचारों से ही यह अध्ययन लगभग समाप्ति के चरण की ओर आगे बढ पाया है। बीच-बीच में बिगडे स्वास्थ्य के होते हुए भी उन्होंने मेरी काफी मदद की है। मेरे गुरुवर परमपूजनीय स्वर्गीय षण्मुखन जी के स्नेह एवं प्रोत्साहन के सामने मैं नतमस्तक हूँ।

आगे मेरे शोधकार्य कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. के.के. गिरीश कुमार जी के निर्देशन से संपन्न हुआ है। उनके सहयोग एवं महत्वपूर्ण सुझावों के फलस्वरूप ही मेरा यह शोधकार्य पूर्ण हो गया है। उनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगी।

मेरे शोध कार्य की विषय विशेषज्ञा कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ. के. अजिता जी के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। शोध के आद्यांत मेरी शंकाओं की निवृत्ति हेतु वे हमेशा प्रस्तुत रही हैं।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य डॉ. आर. शशिधरन जी को मैं तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ, जिन्होंने शुरू से लेकर शोधकार्य की पूर्ति के लिए काफी मदद की है।

विभाग के मेरे अन्य गुरुजन डॉ. के. वनजा जी, डॉ. एन. मोहनन जी के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे आगे बढने की प्रेरणा दी है।

मेरे इस शोधकार्य की पूर्ती में विभाग के पुस्तकालय का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दी विभाग के और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा वहाँ के कर्मचारियों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे मित्रों के प्यार, सहयोग और प्रेरणा मैं कभी नहीं भूल सकती। इस शोधकार्य की पूर्ति के लिए मैं अपने प्रिय मित्रों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

परिवार के सभी सदस्यों के सामने मैं नतमस्तक हूँ। उनकी कृपा एवं प्रोत्साहन से ही मैं यहाँ तक पहूँच पायी हूँ।

अंत में यह शोध प्रबंध विद्वानों के समक्ष सविनय प्रस्तुत कर रही हूँ। इसकी कमियों एवं गलतियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

सविनय

सिंजु पी.वी.

हिन्दी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्चिन-682022

तारीख :

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय 1-74

आँचलिकता की अवधारणा एवं मार्कण्डेय का सर्जनात्मक व्यक्तित्व

1. आँचलिकता की अवधारणा एवं स्वरूप
   - 1.1 अंचल और आंचलिकता : अर्थ एवं परिभाषा
   - 1.2 ग्रामांचल का स्वरूप एवं स्वातंत्र्योत्तर ग्रामांचलिक परिवेश
     - 1.2.1 ग्रामांचल का स्वरूप
     - 1.2.2 स्वातंत्र्योत्तर ग्रामांचलिक परिवेश
       - 1.2.2.1 राजनीतिक परिवेश
       - 1.2.2.2 आर्थिक परिवेश
       - 1.2.2.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश
2. आँचलिक साहित्य : एक समग्र परिदृश्य
   - 2.1 आँचलिक साहित्य की शुरुआत
   - 2.2 आँचलिक साहित्य की विशेषताएँ
   - 2.3 आँचलिकता, स्थानीयता एवं ग्रामीणता
   - 2.4 आँचलिक साहित्य के तत्व
     - 2.4.1 अंचल की भौगोलिक स्थिति का अंकन
     - 2.4.2 अंचल का नायकत्व
     - 2.4.3 अंचल की सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिति का अंकन
     - 2.4.4 जनजागरण के संकेत
     - 2.4.5 आँचलिक भाषा
     - 2.4.6 चित्रात्मक शैली

2.5 आँचलिक साहित्य के प्रकार
2.6 आँचलिक हिन्दी साहित्य : एक परिचय
2.6.1 आँचलिक हिन्दी उपन्यास
2.6.2 आँचलिक हिन्दी कहानी
3. मार्कण्डेय : व्यक्ति और अभिव्यक्ति
3.1 मार्कण्डेय का व्यक्तित्व
3.1.1 जन्म
3.1.2 माता-पिता
3.1.3 बचपन
3.1.4 शिक्षा
3.1.5 नौकरी
3.1.6 परिवार
3.1.7 व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू
3.1.7.1 निर्भीकता एवं विद्रोहात्मकता
3.1.7.2 ग्रामीण जीवन के प्रति लगाव
3.1.7.3 प्रतिबद्धता
3.1.8 मृत्यु
3.2 मार्कण्डेय का कृतित्व
3.2.1 मार्कण्डेय का कहानी साहित्य
3.2.2 मार्कण्डेय का उपन्यास साहित्य
3.2.3 मार्कण्डेय का एकांकी साहित्य
3.2.4 मार्कण्डेय का कविता साहित्य
3.2.5 मार्कण्डेय का आलोचना साहित्य
3.2.6 मार्कण्डेय का संपादन कार्य
3.2.7 पुरस्कार
निष्कर्ष

दूसरा अध्याय 75-142

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में सामाजिक जीवन

2.1 आँचलिक जीवन का पारिवारिक परिवेश

2.1.1 संयुक्त परिवार

2.1.2 एकल परिवार

2.2 पारिवारिक संबन्ध

2.2.1 पति-पत्नी संबन्ध

2.2.2 माता पिता और बच्चों का आपसी संबन्ध

2.2.3 भाई-बहन संबन्ध

2.2.4 बहु और ससुरालों का संबन्ध

2.3 आँचलिक जीवन का सामाजिक परिवेश

2.3.1 उच्च वर्ग

2.3.2 मध्यवर्ग

2.3.3 निम्नवर्ग

2.4 सामाजिक संबन्ध

2.5 शिक्षा

2.6 स्वास्थ

2.7 नारी जीवन की संवेदना एवं प्रतिरोध

2.7.1 नारी : प्रेम, त्याग और करुणा का प्रतिरूप

2.7.3 नारी और विवाह

2.7.3.1 बाल विवाह

2.7.3.2 अनमेल विवाह

2.7.3.3 बहु विवाह

2.7.4 नारी शोषण और प्रतिरोध

2.7.4.1 सगे संबन्धियों द्वारा शोषण

2.7.4.2 सामंतों द्वारा शोषण

2.8 हाशियेकृत लोगों की समस्या एवं प्रतिरोध
2.8.1 दलित
2.8.2 किसान
2.8.3 नौकर
2.8.4 मज़दूर
निष्कर्ष

तीसरा अध्याय 143-198

मार्कण्डेय के कथासाहित्य में राजनीति एवं अर्थ

3.1 स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिवेश एवं मार्कण्डेय की राजनीतिक विचारधारा
3.2 ग्रामीण जीवन की राजनीतिक गतिविधियाँ
3.2.1 सत्ता के केन्द्र में ज़मींदार
3.2.2 मानवीय संबन्धों में दरार
3.2.3 निराशा
3.2.4 जातिवाद
3.3 चुनाव की राजनीति
3.4 राजनीति और भ्रष्टाचार
3.4.1 अर्थलोभ की पूर्ति
3.4.2 राजनीतिज्ञों और सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत
3.4.3 भ्रष्ट राजनीति का प्रतिरोध
3.5 स्वातंत्र्योत्तर ग्रामांचलिक जीवन का आर्थिक संदर्भ
3.6 ग्रामांचलिक आर्थिक दुर्दशा का कारण
3.6.1 बेरोज़गारी
3.6.2 मशीनीकरण
3.6.3 नगरोन्मुखता
3.6.4 गरीबी
3.6.5 ऋणग्रस्तता

3.7 धनलोलुपता और मूल्यों का ह्रास
3.8 आर्थिक सुधार योजनाओं की विफलता
3.8.1 ज़मींनदारी उन्मूलन
3.8.2 आर्थिक विकास योजनाओं की विफलता
3.9 आर्थिक शोषण और वर्ग संघर्ष एवं विद्रोह
निष्कर्ष

चौथा अध्याय 199-247
मार्कण्डेय के कथासाहित्य में संस्कृति एवं धर्म

4.1 ग्रामांचलिक जीवन के सांस्कृतिक आयाम
4.1.1 प्रकृति से जुडी जिन्दगी
4.1.1.1 कृषक जीवन
4.1.1.2 स्त्री और प्रकृति
4.1.2 सहयोग की भावना
4.1.3 रहन-सहन, खान-पान एवं रीति रिवाज़
4.1.3.1 वेश-भूषा
4.1.3.2 खान-पान
4.1.3.3 रीति-रिवाज
4.1.4 विवाह का सांस्कृतिक पक्ष
4.1.5 मनोरंजनात्मक पहलू
4.1.5.1 गपशप
4.1.5.2 कबड्डी और कुश्ती
4.1.6 पर्व एवं त्योहार
4.1.7 लोकगीत
4.2 ग्रामांचलिक जीवन और धर्म
4.3 ग्रामांचलिक जीवन के धार्मिक आयाम
4.3.1 ग्रामदेवता की पूजा

4.3.2 मनौतियाँ
4.3.3 तीर्थयात्रा
4.4 धार्मिक जीवन का नकारात्मक पक्ष
4.4.1 अस्पृश्यता
4.4.2 साधुओं पर विश्वास
4.4.3 अंधविश्वास
4.4.3.1 भूत-प्रेत
4.4.3.2 शकुन-अपशकुन
4.4.3.3 शुभ-अशुभ
निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय 248-286

मार्कण्डेय के कथासाहित्य का संरचना पक्ष

5.1 देश-काल वातावरण
5.2 संवाद
5.3 मार्कण्डेय के कथासाहित्य की भाषा
5.3.1 शब्दयोजना
5.3.1.1 देशी शब्द
5.3.1.2 तत्सम शब्द
5.3.1.3 विदेशी शब्द
5.4 यौगिक शब्द
5.5 ध्वन्यात्मक शब्द
5.6 मुहावरे और कहावतें
5.7 भाषा के कलात्मक प्रयोग
5.7.1 अलंकार
5.7.2 प्रतीक
5.7.3 बिम्ब

5.8 काव्य का प्रयोग
5.9 मार्कण्डेय के कथासाहित्य की शैली
5.9.1 वर्णनात्मक शैली
5.9.2 विश्लेषणात्मक शैली
5.9.3 संकेतात्मक शैली
5.9.4 संवादात्मक शैली
5.9.5 पूर्वदीप्ति शैली
5.9.6 किस्सागोई शैली
5.9.7 फंतासी शैली
5.9.8 चित्रात्मक शैली
निष्कर्ष

उपसंहार 287-293

परिशिष्ट 294

संदर्भ ग्रन्थ सूची 295-304